15.07.2020.

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science

B.A 1st year. paper. I. Basic principles of political Theory

Topic - Nature, scope and significance of political Theory - 2

Lecture - 66

Scope of political Theory - राजनीति-सिद्धांत का विचारक्षेत्र - 2

राजनीति-दर्शन का मुख्य सरोकार इस समस्या से है कि 'उत्तम जीवन' की प्राप्ति के लिए किस तरह का राजनीतिक संगठन उपयुक्त होगा? उत्तम जीवन क्या है - इस पर तर्क वितर्क तो हो सकता है, परंतु यह वैज्ञानिक अन्वेषण का विषय नहीं है। यह केवल नैतिक चिंतन का विषय है। राजनीति विज्ञान केवल अनुभवमूलक ज्ञान को मान्यता देता है। यह हमें 'उत्तम जीवन' की परिभाषा तो नहीं देता, परंतु इससे हमें उत्तम जीवन के बारे में हमारी बहुत - सी मान्यताओं को परखने में सहायता अवश्य मिलती है। आज हम नैतिक चिंतन के क्षेत्र में भी किसी मान्यता को अंतिम रूप से प्रमाणिक नहीं मान लेते बल्कि नए तथ्यों और नए प्रमाणों को ध्यान में रखकर अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करने के लिए तैयार रहते हैं। इससे राजनीति विज्ञान और राजनीति दर्शन के परस्पर संबंध की पुष्टि होती है।

राजनीति का वैज्ञानिक अध्ययन आधुनिक युग की महत्वपूर्ण देन है। इसी अर्थ में राजनीति विज्ञान को एक आधुनिक विषय माना जाता है। संक्षेप में, राजनीति-सिद्धांत के अंतर्गत राजनीतिक जीवन की विभिन्न अभिव्यक्तियों के अध्ययन के लिए उपयुक्त पद्धतियों (methods) का चयन और प्रयोग किया

किया जाता है। इसमें राजनीतिक संस्थाओं (Political Institutions) एवं राजनीतिक व्यवहार (Political Behaviour) के अध्ययन के लिए वर्णनात्मक - वैज्ञानिक पद्धति (Descriptive - scientific Method) अपनाई जाती है। और राजनीतिक संकल्पनाओं एवं विचारों (Political Concepts and Ideas) के अध्ययन के लिए मानकीय - दार्शनिक पद्धति (Normative - philosophical Method) का प्रयोग किया जाता है।

राजनीति - सिद्धांत का विषय क्षेत्र
(Scope of Political Theory)

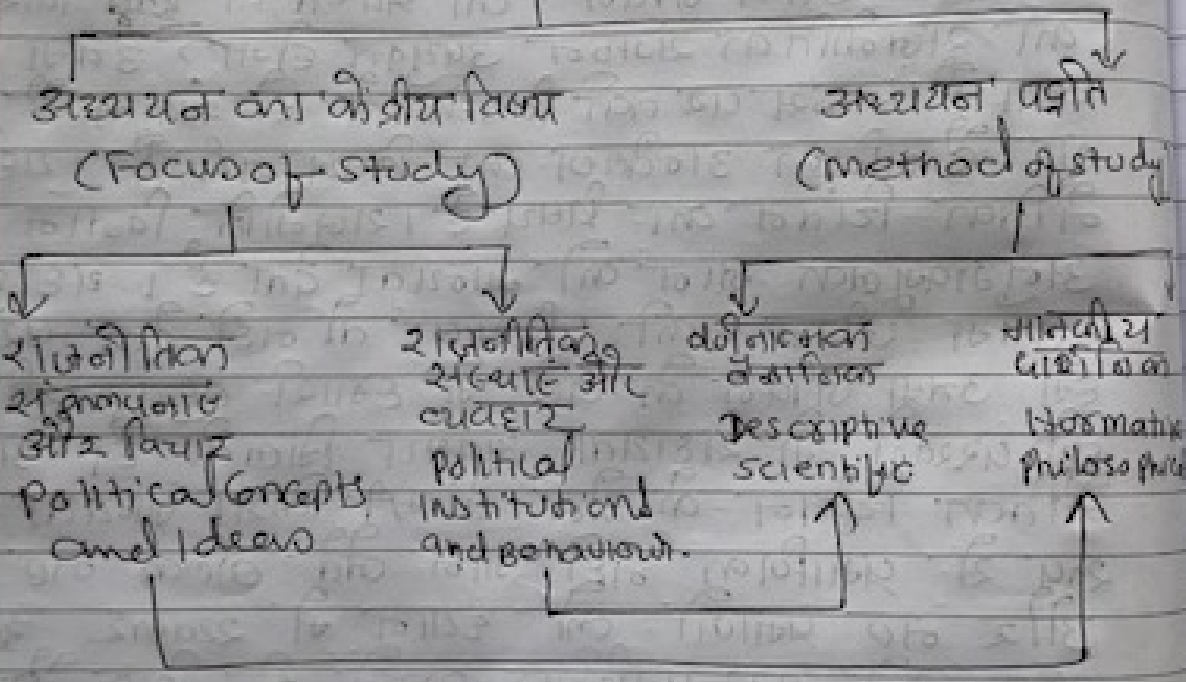

वैज्ञानिक पद्धति (Scientific Method) वह पद्धति जिसके अंतर्गत वस्तुस्थिति या तथ्यों (Facts) पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और उनमें परस्पर संबंध का पता लगाने का प्रयास करते हैं। अतः यह तथ्यों के निरीक्षण (Observations) और नियमों (Laws) के अन्वेषण का क्षेत्र है। इसका ध्येय वस्तुस्थिति के बारे में विश्वसनीय ज्ञान (Reliable Knowledge)

अर्जित करना है। राजनीति के अध्ययन मे इस पद्धति के प्रयोग से राजनीति (Political Science) का जन्म होता है।

मानकीय पद्धति (Normative method) - वह पद्धति जिसमें मानव जीवन की विभिन्न स्थितियों के संदर्भ में इस समस्या पर विचार करते है कि कहां क्या होना चाहिए? अतः यह मानव का प्रयोजन (purpose) उसके लक्ष्य (Goals) और आदर्श (Ideals) निर्धारित करने का क्षेत्र है। इसमें प्रचलित प्रबंधों की आलोचना (criticism) की जाती है, और सामाजिक पुनर्निर्माण (Social Reconstruction) की योजना प्रस्तुत की जाती है।

दार्शनिक पद्धति (philosophical method) वह पद्धति जिसमें विश्व और मानव समाज की गुत्थियों को सुलझाने के लिए बुनियादी संकल्पनाओं (Basic Concepts) का निर्माण करते है बुनियादी प्रश्न उठाए जाते है; यह पता लगाते है कि हम किन बातों का निरीक्षण कर सकते हैं, किन बातों का निरीक्षण नहीं कर सकते? जो बाते निरीक्षण से परे है, उन्हें समझने के लिए हम तर्क पर आधारित विचार-प्रणाली का निर्माण करते है, और यह निर्णय करते है कि हम किस तरह के ज्ञान पर विश्वास कर सकते है, किस तरह के ज्ञान पर विश्वास नहीं कर सकते? मानकीय पद्धति से प्राप्त ज्ञान को भी दार्शनिक पद्धति के अंतर्गत यथोचित मान्यता दी जाती है। राजनीति के अध्ययन के क्षेत्र मे मानकीय और दार्शनिक पद्धतियों का संयोग राजनीति दर्शन (Political philosophy) के रूप में सार्थक होता है।